जनसत्ता
सत्ता समर
25 अप्रैल, 2019 7

ऑटो से प्रचार

उत्तर मुंबई लोकसभा क्षेत्र से कांग्रेस की उम्मीदवार उर्मिला मातोंडकर बुधवार को बोरीवली पूर्व में प्रचार अभियान के दौरान ऑटो पर बैठी हुईं। उर्मिला ने अनूठे अंदाज में मतदाताओं से बातचीत की।

जीत की तिकड़ी बनाने को मैदान में शताब्दी

प्रभाकर मणि तिवारी
कोलकाता

अपने दौर में जानी-मानी अभिनेत्री रहीं शताब्दी राय इस बार बाउल और लाल मिट्टी की इस धरती पर जीत की हैट्रिक बनाने के लिए मैदान में हैं। लेकिन अबकी वे तिकोने मुकाबले में फंसी हैं। बीरभूम जिला कविगुरु रबींद्रनाथ टैगोर के बसाए शांतिनिकेतन के लिए मशहूर रहा है। शताब्दी ने किसी दौर में माकपा का गढ़ रही इस सीट पर वर्ष 2009 में तृणमूल कांग्रेस के टिकट पर पहली बार जीत हासिल की थी। उसके बाद वर्ष 2014 में भी उन्होंने इस सीट पर अपना कब्जा बरकरार रखा। हालांकि इन पांच साल के दौरान पार्टी को मिलने वाले वोटों में लगभग 11.72 फीसद गिरावट दर्ज की गई। अबकी भाजपा ने भी इस सीट पर अपनी पूरी ताकत झोंक दी है।

उसके लिए इस सीट की कितनी अहमियत है, इस बात का पता इसी से चलता है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से लेकर भाजपा अध्यक्ष अमित शाह तक यहां चुनावी रैलियां कर चुके हैं।

बीरभूम बंगाल की उन चुनिंदा सीटों में शामिल है जहां भाजपा को अपना खाता खुलने की उम्मीद है। राज्य के दूसरे इलाकों के मुकाबले यहां पार्टी का संगठन कुछ मजबूत है और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और विश्व हिंदू परिषद जैसे संगठन भी इलाके में लंबे अरसे से सक्रिय हैं। हाल के दिनों में यह इलाका राजनीतिक हिंसा और बम विस्फोटों की वजह से सुर्खियों में रहा है। पार्टी ने यहां दूध कुमार मंडल को अपना उम्मीदवार बनाया है। माकपा की ओर से अबकी रिजाउल करीम मैदान में हैं।शताब्दी वर्ष 2009 के लोकसभा चुनावों में ममता बनर्जी की लहर और अपने ग्लैमर के सहारे 47.42 फीसद वोट पाकर जीती थीं। तब माकपा के ब्रज मुखर्जी दूसरे और भाजपा के तापस मुखर्जी तीसरे स्थान पर थे, लेकिन वर्ष 2014 के चुनावों में राय को मिलने वाले वोटों में 11.72 फीसद की गिरावट आई। 2009 में महज 4.62 फीसदी वोट पाने वाली भाजपा को 2014 में यहां 18.47 फीसदी वोट मिले थे। लगभग 23 लाख की आबादी वाले इस जिले में 35 फीसदी अनुसूचित जाति व जनजाति तबके के हैं। जिले की कुल आबादी में से 85.7 फीसद ग्रामीण और 14.3 फीसद शहरी इलाकों में रहती है।

शताब्दी राय

दिग्गज दंगल — बंगाल बीरभूम

दूध कुमार मंडल

यहां तृणमूल कांग्रेस और भाजपा दोनों जीत के दावे कर रही हैं। शताब्दी राय कहती हैं कि यहां उनकी जीत की हैट्रिक बनेगी। वे बीते चुनाव में तृणमूल कांग्रेस के वोटों में गिरावट से परेशान नहीं हैं। राय का दावा है कि अबकी उनको पहले के मुकाबले ज्यादा वोट मिलेंगे। लोग भाजपा का असली चेहरा पहचान चुके हैं। दूसरी ओर, प्रधानमंत्री मोदी और अमित शाह जैसे शीर्ष नेताओं की रैलियों से बम-बम भाजपा उम्मीदवार दूध कुमार मंडल कहते हैं अबकी इस सीट पर पाटी का खाता खुलना तय है। उनका दावा है कि बीते साल हुए पंचायत चुनावों की तरह लोकसभा चुनावो में भी इलाके के लोग भाजपा का समर्थन करेंगे।

ऐ भाई...

बिहार के बेगूसराय में बुधवार को भारतीय जनता पार्टी की रैली में शामिल पार्टी का बुजुर्ग समर्थक

'कुशवाहा' की जमीन पर फिर 'कमल' खिलाने की चुनौती

दलसिंहसराय (बिहार), (भाषा)।

'जीतने के बाद क्षेत्र में नहीं आने पर जनता छोड़ देती है...दिल्ली, बंबई रहियेगा जो क्षेत्र से उखड़ जाइएगा', यह टिप्पणी उजियारपुर लोकसभा सीट पर अपनी किस्मत आजमा रहे भाजपा के नित्यानंद राय और महागठबंधन के उपेंद्र कुशवाहा के बारे में पातेपुर, विभूतिपुर से लेकर सरायरंजन तक एक बड़े वर्ग के लोगों की है। लोगों का कहना है कि सड़क व बिजली के क्षेत्र में काफी अच्छा काम हुआ है लेकिन शिक्षा व स्वास्थ्य सेवा में स्थिति ज्यों की त्यों बनी हुई है। उजियारपुर में कुशवाहा और यादव मतदाताओं की अच्छी-खासी तादाद है, जो अतीत में जीत-हार में अपनी अहम भूमिका निभाते रहे हैं। नित्यानंद राय, यादव समाज से आते हैं जबकि कुशवाहा समुदाय से उपेंद्र कुशवाहा हैं।

दिग्गज दंगल — बिहार उजियारपुर

उपेंद्र कुशवाहा

उजियारपुर के रास्ते में लोकनाथपुरगंज में सुबह-सुबह एक चाय की दुकान पर लोग जुटे हैं। चर्चा चुनाव की हुई तो स्थानीय निवासी साजन पासवान बोले, 'हर क्षेत्र में काम हुआ है, पहले छह-सात घंटे मुश्किल से बिजली रहती थी, अब 15 से 18 घंटे रहती है। लेकिन सांसद महोदय खुद नहीं आते हैं।' मालपुर पंचायत के उमेश यादव कहते हैं कि ठीक है कि इस क्षेत्र में कुछ बुनियादी काम हुए हैं लेकिन शिक्षा और स्वास्थ्य सुविधा की स्थिति खराब है। सांसद महोदय क्षेत्र में नहीं आते। यही स्थिति तो उपेंद्र कुशवाहा की है जिसके कारण उन्हें दो सीटों पर लड़ना पड़ रहा है।

उन्होंने कहा, 'जीतने के बाद क्षेत्र में नहीं आने पर जनता छोड़ देती है...दिल्ली, बंबई रहियेगा जो क्षेत्र से उखड़ जाइएगा।' विद्यापति नगर में गोस्वामी समुदाय के जगबंधु गिरि कहते हैं कि पांच वर्षों में इस क्षेत्र में काम हुआ है, विद्यापति नगर में रेलवे स्टेशन का विकास एवं विस्तार कार्य इसमें महत्त्वपूर्ण है लेकिन वर्षों से विद्यापति इंटर कालेज को मान्यता नहीं मिलने का उन्हें मलाल है। शीतलापट्टी में युवाओं का एक बड़ा वर्ग मानता है कि अब जाति, धर्म से कोई फायदा नहीं होने वाला है । उनका कहना है कि युवा पीढ़ी के लिए जाति और धर्म कोई मायने नहीं रखता है। पहले की पीढ़ी के लोग जाति पर वोट कर देख चुके हैं, उससे न जाति को लाभ हुआ और न ही समाज को।

इत्र नगरी में सपा को भितरघात का भय

अंशुमान शुक्ल
लखनऊ।

उत्तर प्रदेश की कन्नौज लोकसभा सीट अखिलेश यादव की प्रतिष्ठा का प्रश्न बन चुकी है। यहां से पत्नी डिंपल यादव चुनाव मैदान में हैं। वर्ष 2012 के लोकसभा उपचुनाव में वे इस सीट से निर्विरोध सांसद रह चुकी हैं। 1999 से यह सीट समाजवादी पार्टी के कब्जे में है। इस बार चाचा शिवपाल यादव के अलग हो जाने से इस सीट पर समाजवादी पार्टी दो खेमों में बंटी नजर आ रही है। भारतीय जनता पार्टी ने कन्नौज से डिंपल को चुनौती देने के लिए सुब्रत पाठक पर एकबार फिर से भरोसा जताया है जबकि कांग्रेस ने यहां से अपना उम्मीदवार मैदान में नहीं उतारा है।

कन्नौज का उदय गुप्तोत्तर काल में महान शासक हर्षवर्धन की राजधानी के रूप में हुआ था। कान्यकुब्ज ब्राह्मणों का उद्गम स्थान होने से इसे कन्नौज कह कर पुकारा जाने लगा। गंगा नदी के दोआब पर बसे इस जिले में समाजवादी विचारधारा का झंडा हमेशा बुलंद होता रहा है। इत्र की सुगन्ध से दुनिया में अपनी पहचान बनाने वाले उत्तर प्रदेश के इस शहर में विकास अब तक जमीन पर कहीं-कहीं ही उतरा है। कन्नौज में इत्र बनाने के तकरीबन 200 से ज्यादा कारखाने हैं। मुख्यमंत्री रहने के दौरान अखिलेश यादव ने फ्रांस का दौरा किया था और वहां से लौटते ही उन्होंने इंटरनैशनल परफ्यूम म्यूजियम के साथ ही इत्र पार्क बनाने का ऐलान किया था।

पांच साल उत्तर प्रदेश में पूर्ण बहुमत की सरकार चलाने के बाद भी अपने ही गढ़ ने वर्ष 2017 के विधानसभा चुनाव में अखिलेश यादव को कन्नौज ने खारिज कर दिया। यहां की पांच विधानसभा सीटों में से सिर्फ एक पर ही समाजवादी पार्टी जीत दर्ज कर पाने में कामयाब हुई। वह भी 2400 मतों के अंतर से। बाकी की सभी चार सीटों पर भारतीय जनता पार्टी ने कब्जा जमा लिया। दो वर्ष पहले हुए विधानसभा के चुनावों में अपने ही गढ़ में अखिलेश यादव की इतनी करारी हार, लोकसभा चुनावों में उन्हें परेशान किये हुए है।

ऐसा रहा कामकाज

कन्नौज लोकसभा सीट से 2014 में दूसरी बार जीतीं डिंपल यादव की लोकसभा में मौजूदगी 31 प्रतिशत रही। कन्नौज लोकसभा में विकास कार्य के लिए सांसद डिंपल यादव ने छह से सात करोड़ की धनराशि के प्रस्ताव शासन को भेजे। जो डीआरडीए तथा ग्रामीण अभियन्त्रण विभाग में लम्बित पड़े हैं। विगत दो वित्तीय वर्ष से शासन द्वारा सांसद निधि निर्गत न किए जाने से 27 छोटी सड़कें ग्रामीण अभियन्त्रण विभाग में तथा डीआरडीए विभाग में 42 सड़कें लम्बित हैं।

दिग्गज दंगल — यूपी कन्नौज

भारतीय जनता पार्टी ने कन्नौज से डिंपल को चुनौती देने के लिए सुब्रत पाठक पर एकबार फिर से भरोसा जताया है ।

डिंपल यादव

सुब्रत पाठक

समाजवादी विचारधारा के जनक डॉ राम मनोहर लोहिया की कर्मभूमि रहे कन्नौज में इस बार समाजवादी पार्टी भितरघात की आशंका से दोहरी है। उसकी पेशानी पर बल शिवपाल सिंह यादव पैदा कर रहे हैं। यादव मतदाताओं की संख्या यहां अधिक होने से शिवपाल के समर्थकों की संख्या भी यहां खासी है। सिर्फ 1984 में इस लोकसभा सीट पर कांग्रेस ने जीत दर्ज की थी। इंदिरा गांधी के निधन के बाद उपजी सहानभूति लहर में शीला दीक्षित यहां से सांसद बनी थीं। इस बार कांग्रेस ने यहां अपना प्रत्याशी नही उतारा है। वर्ष 2011 की जनगणना के मुताबिक कन्नौज की जनसंख्या 16 लाख 57 हजार है। इनमें 16 फीसद यादव, 36 फीसद मुसलमान, 15 फीसद ब्राह्मण और करीब 10 फीसद राजपूत हैं। जबकि ओबीसी मतदाताओं में लोधी, कुशवाहा, पटेल, बघेल मतदाताओं की संख्या भी यहां खासी है। ऐसे में अल्पसंख्याक मतों का बिखराब रोकना अखिलेश यादव के लिए बड़ी चुनौती है।

डिंपल ने कन्नौज के सैदपुर सकरी गांव को गोद लिया था। जिसे दो साल में शीर्ष के पांच आदर्श ग्रामों में पंहुचा दिया है। डिंपल के गांव ने नरेंद्र मोदी के गांव को भी पीछे छोड़ दिया। पक्की सड़कें, पीने के लिए शुद्ध पानी, बिजली, शौचालय, प्राथमिक शिक्षा और चिकित्सा केंद्र । सब कुछ इस गांव में है। डिंपल यादव ने दूसरे गोद लिए गांव छिबरामऊ जिले के रौसेन में भी विकास कार्य कराए हैं। बावजूद इसके विधानसभा चुनावों में यहां की पांच में से चार सीटें जीत कर भाजपा ने अखिलेश के गढ़ में पांव जमा लिए हैं। ऐसे में देखना दिलचस्प होता है कि इस बार मतदाता किस दल पर अपना भरोसा जताते हैं?

बिहार में बाहुबलियों की पत्नियां ठोक रही हैं ताल

सीवान/नई दिल्ली, (भाषा)।

सीवान में राष्ट्रीय जनता दल (राजद) की उम्मीदवार हीना शहाब हों या उनकी प्रतिद्वंद्वी जद (एकी) की कविता सिंह या फिर मुंगेर में कांग्रेस उम्मीदवार नीलम सिंह। पार्टियां अलग-अलग लेकिन बाहुबली पतियों की आपराधिक पृष्ठभूमि के कारण 'परिस्थितिजन्य उम्मीदवारी' तीनों को सौगात में मिली और अब वे चुनावी अखाड़े में पूरे दमखम से ताल ठोक रही हैं। पिछले दो लोकसभा चुनाव हार चुकी हीना चार बार सीवान के सांसद रहे बाहुबली शहाबुद्दीन की पत्नी हैं जो अपहरण और हत्या के मामले में उम्रकैद की सजा काट रहे हैं। जद (एकी) उम्मीदवार और दरौंधा से दो बार की विधायक कविता बाहुबली अजय सिंह की पत्नी हैं जिन्हें कई आपराधिक मामलों के कारण टिकट नहीं दिया गया। मुंगेर में मोकामा विधायक अनंत सिंह की पत्नी नीलम पहली बार चुनाव लड़ रही हैं जिनका सामना प्रदेश के जल संसाधन मंत्री राजीव रंजन सिंह उर्फ ललन सिंह से है। कभी नीतीश कुमार के करीबी रहे अनंत दो बार जद (एकी) के टिकट पर चुनाव जीते लेकिन मुख्यमंत्री से मतभेद होने पर अब निर्दलीय विधायक हैं। उनके खिलाफ हत्या, अपहरण, फिरौती और शस्त्र कानून के तहत डेढ़ दर्जन मामले दर्ज हैं।

बिहार

हीना शहाब

कविता सिंह

नीलम सिंह

शहाबुद्दीन जेल में हैं लेकिन हीना को उनके पिछले काम के बूते जीत का यकीन है। उन्होंने एक बातचीत में कहा कि साहब तो 15 साल से नहीं हैं। मुझे घर में हर समय उनकी कमी खलती है। लेकिन जनता के प्यार को देखकर मुझे गर्व होता है कि मैं सीवान की बेटी और बहू हूं। उन्होंने कहा- मैं 2009 में पर्दे से निकलकर राजनीति में आई लेकिन खुलकर अपने विचार नहीं रख सकी। फिर 2014 में ठान कर आई कि हार से घबराना नहीं है और हार कर जीतने वाला ही सिकंदर होता है। मैं पिछले पांच साल में सीवान के लोगों के सुख-दुख में साथ रही। दो बार दरौंधा से विधायक रहीं कविता का मानना है कि हर सफल महिला के पीछे पुरुष होता है और उनके पीछे अजय सिंह हैं। उन्होंने कहा- यहां लड़ाई दो महिलाओं की नहीं, बल्कि यूपीए और एनडीए की है। मुझे मोदी लहर, नीतीश जी के काम और अपने पति की साख के दम पर जीत का यकीन है। देश चाहता है कि मोदीजी फिर प्रधानमंत्री बनें और सीवान के लिए भी राष्ट्रीय मुद्दे सर्वोपरि हैं। कविता ने अपने चुनाव लड़ने को महिला सशक्तीकरण की प्रक्रिया का हिस्सा बताया। मुंगेर की कांग्रेस उम्मीदवार नीलम सिंह का भले ही यह पहला चुनाव हो लेकिन वह खुद को डमी उम्मीदवार नहीं मानतीं। उन्होंने कहा- विरोधियों को कोई और मुद्दा नहीं मिल रहा इसलिए मुझे डमी कह रहे हैं। उन्होंने कहा- मुंगेर में कोई मोदी लहर नहीं है। यहां महागठबंधन की लहर है।

दो दिग्गजों की प्रतिष्ठा दांव पर, गठबंधन बना मुसीबत

अवनीश कुमार
कानपुर।

उद्योग नगरी कहे जाने वाले कानपुर में चुनाव बेहद दिलचस्प होता नजर आ रहा है। जहां एक और कांग्रेस ने अपनी पार्टी के वरिष्ठ नेता व पूर्व केंद्रीय मंत्री श्रीप्रकाश जायसवाल को एक बार फिर कानपुर से चुनावी मैदान में उतार दिया है तो वहीं भाजपा ने वरिष्ठ नेता मुरली मनोहर जोशी की जगह उत्तर प्रदेश सरकार में कैबिनेट मंत्री व गोविंद नगर विधानसभा से विधायक सत्यदेव पचौरी पर दांव लगाया है। साथ ही सपा-बसपा का गठबंधन भी पीछे नहीं है। उसने यहां से राम कुमार निषाद को प्रत्याशी बनाया है।

अगर अतीत के पन्नों पर नजर डालें तो इस बार का लोकसभा चुनाव कानपुर का बेहद दिलचस्प होता नजर आ रहा है। 2004 में हुए लोकसभा चुनाव में भाजपा ने सत्यदेव पचौरी को उम्मीदवार बनाया था लेकिन वे हार गए थे। तब कांग्रेस के उम्मीदवार श्रीप्रकाश जायसवाल ने 2,11,109 वोट और पचौरी को 205, 471 वोट मिले थे।

2009 में पार्टी ने पचौरी को मौका नहीं दिया। उनके बदले में सतीश महाना मैदान में उतरे लेकिन श्रीप्रकाश जायसवाल से उन्हें भी हार का सामना करना पड़ा। 2014 के चुनाव में मोदी लहर ने काम किया और वाराणसी संसदीय सीट छोड़कर आए सांसद मुरली मनोहर जोशी ने श्रीप्रकाश जायसवाल को हरा दिया। इस चुनाव में श्रीप्रकाश करीब 2.22 लाख वोटों से हारे थे। लेकिन इस बार कानपुर लोकसभा सीट पर मुकाबला त्रिकोणीय हो गया है.

कानपुर की जनता से मुझे बेहद लगाव है और जनता उन्हें अपना मानती है इसलिए उसका आशीर्वाद मुझे जरूर मिलेगा। बाकी पांच साल केंद्र में रहते हुए भाजपा ने जनता के साथ सिर्फ छलावा ही किया है।

-श्रीप्रकाश जायसवाल
कांग्रेस उम्मीदवार

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को जनता ने पुनः प्रधानमंत्री बनाना चाहती है। लिहाजा कानपुर की जनता से बेहद प्यार मिल रहा है। मुझे पूरा भरोसा है कि मैं चुनाव कानपुर से जीतकर दिल्ली जाऊंगा। यहां की जनता भारी मतों के साथ मुझे विजयी बना रही है।

-सत्यदेव पचौरी
भाजपा उम्मीदवार

दिग्गज दंगल — यूपी कानपुर

मैदान में उतरे स्टार प्रचारक

कांग्रेस प्रत्याशी श्री प्रकाश जायसवाल के पक्ष में प्रियंका गांधी ने रोड शो करके जनता को कांग्रेस के पक्ष में करने में कोई कोर कसर नहीं छोड़ी है तो वही भाजपा ने भी सत्यदेव पचौरी के पक्ष में मैदान में योगी आदित्यनाथ, उमा भारती उतर चुके हैं।

क्या कहता है समीकरण

कानपुर लोकसभा सीट में 16 लाख वोटर हैं। इसमे पुरुष वोटरों की संख्या 8,74,299 है, महिला वोटरों की संख्या 7,23,147 है। वहीं थर्ड जेंडर की संख्या 145 है। कानपुर लोकसभा क्षेत्र ब्राह्मण बहुल है। यहां शहरी क्षेत्र में पांच विधानसभाए हैं. जिनमें सामान्य जाति के 5,16,594, पिछड़ा वर्ग के 2,90,721, अल्पसंख्यक के 4,07,182 और अनुसूचित जाति के 3,80,950 मतदाता हैं।

दोनों दिग्गजों की अच्छी पैठ

श्रीप्रकाश जायसवाल कांग्रेस के अंदर गांधी परिवार के बेहद करीबी माने जाते हैं। लोग ऐसा भी कहते हैं पाटी इनकी ईमानदारी व नेक छवि के कारण उन पर बहुत विश्वास करती है। जायसवाल कानपुर शहर के मेयर भी रहे। तीन बार सांसद बने। यूपीए सरकार में गृह राज्यमंत्री और बाद में कोयला मंत्री भी रहे।

भाजपा के सत्यदेव पचौरी संघ परिवार से जुड़े हैं। पचौरी की एक अलग ही और जमीनी नेता के रूप में पहचान है। अभी पचौरी उत्तर प्रदेश सरकार में कैबिनेट मंत्री हैं। गोविंद नगर विधानसभा से विधायक हैं।

सपा-बसपा गठबंधन

सपा बसपा गठबंधन होने के बाद सपा ने रामकुमार निषाद को प्रत्याशी बनाया है। कानपुर में बड़ी संख्या में ओबीसी, अनुसूचित जाति और मुस्लिम वोटर हैं। सपा अब इन्हीं वोटरों पर सेंध लगाना चाहती है।

रामकुमार निषाद के पिता मनोहर लाल 1977 में कानपुर लोकसभा सीट से सांसद भी रह चुके हैं। अतीत में कानपुर लोकसभा सीट पर कभी भी सपा और बसपा का जादू नहीं चल पाया लेकिन दोनों ही पार्टी के प्रत्याशी कहीं ना कहीं कांग्रेस व भाजपा के लिए मुसीबत बनकर सामने खड़े रहे।

ऐसा ही कुछ 2004 के लोकसभा चुनाव में देखने को मिला था जब पहली बार सत्यदेव पचौरी व श्रीप्रकाश जायसवाल आमने-सामने थे और ऐसे में समाजवादी पार्टी के हाजी मुस्ताक सोलंकी के कारण जायसवाल की जीत का अंतर बेहद कम रह गया था।